वर्ष–13, अंक–6
इंटरनेट संस्करण : 201

गर्भनाल पत्रिका

www.garbhanal.com
ISSN 2249–5967
अगस्त 2023
(An International Peer Reviewed (Refereed) Research Journal)

अंतरराष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित मूल्यांकित मासिक शोध पत्रिका

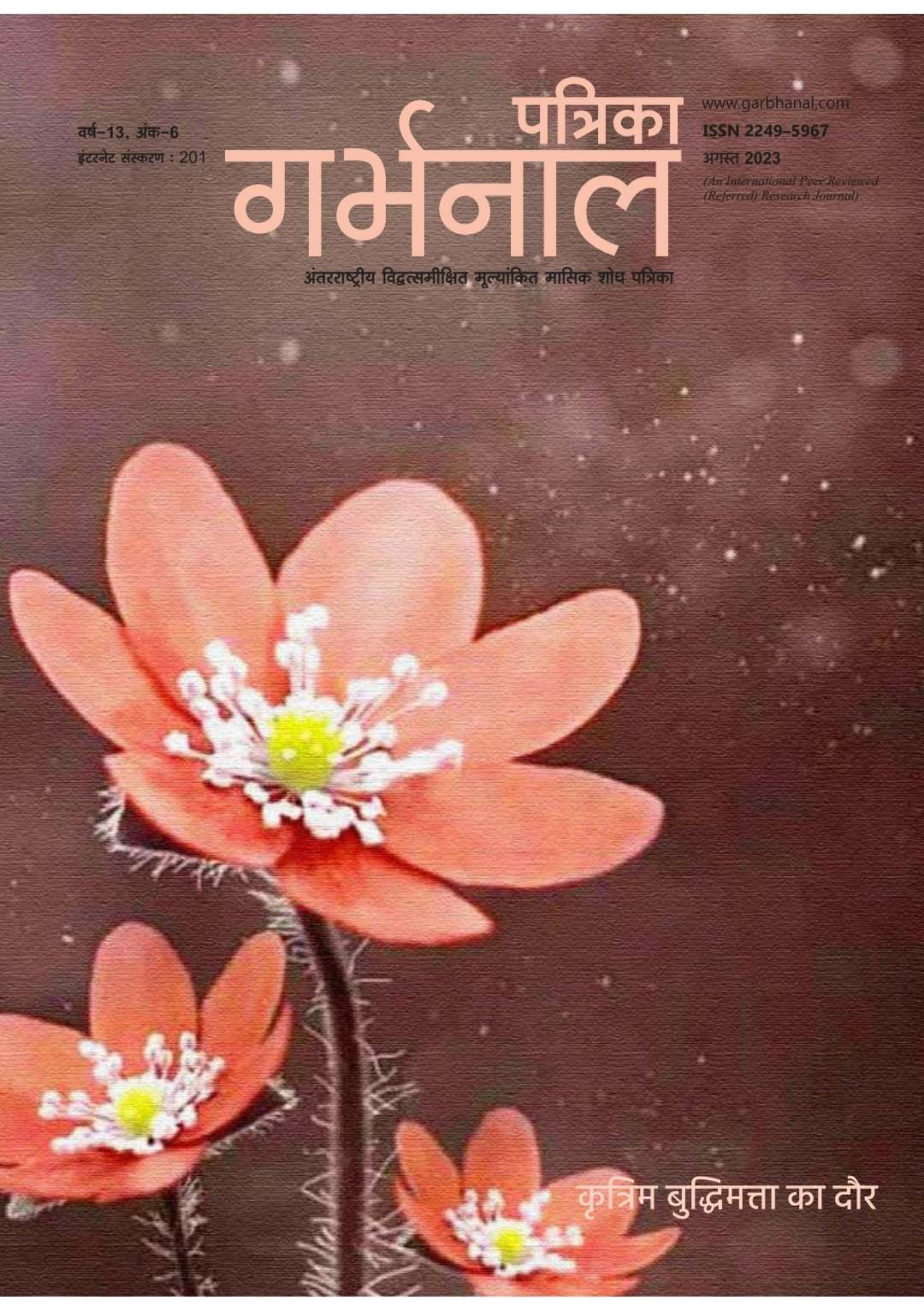

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दौर

MPHIN/2011/55820

गर्भनाल पत्रिका

अंतरराष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित मूल्यांकित मासिक शोध पत्रिका
(An International Peer Reviewed (Referred) Research Journal)

वर्ष-13, अंक-06 (इंटरनेट संस्करण : 201)

अगस्त 2023

सम्पादकीय मंडल :

डॉ. हाइंस वर्नर वेसलर
प्राध्यापक, उप्साला विश्वविद्यालय, स्वीडन

प्रो. दलपत सिंह राजपुरोहित
प्राध्यापक, डिपार्टमेंट ऑफ़ एशियन स्टडीज़,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास (ऑस्टिन), अमेरिका

डॉ. ओम विकास,
प्रोफेसर-एमेरिटस, एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र

समीक्षा समिति (Peer Reviewed Committee) :

डॉ. धर्मेन्द्र पारे
निदेशक,
जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल

प्रो. हरीश अरोड़ा
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर

राहुल उपाध्याय
भाषा विशेषज्ञ, सिएटल, अमेरिका

सम्पादक :
सुषमा शर्मा
सम्पादकीय सलाहकार :
कविता विकास
आकल्पन सहयोग :
डॉ. बृजेश तिवारी, लखनऊ
आवरण चित्र :
गूगल से साभार

कानूनी सलाहकार :
संजीव जायसवाल

सम्पर्क :
डीएक्सई-23, मीनाल रेसीडेंसी,
जे.के. रोड, भोपाल-462023 (म.प्र.) भारत
ईमेल : garbhanal@ymail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी सुषमा शर्मा के लिए अंश प्रिंट, एफ-1 करन अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 95, ई-8, त्रिलंगा, भोपाल द्वारा मुद्रित एवं डीएक्सई-23, मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल से प्रकाशित।

सम्पादकीय	: कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दौर	2
बतकही	: पहली विदेश यात्रा *प्रो. अनिल कुमार*	4
	: दुनिया मेरे आगे *डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव*	9
स्मरण	: महादेव देसाई *दिशा जगूड़ी*	13
संदर्भ	: प्रकाश प्रदूषण *सुधा भार्गव*	18
अनुवाद	: दूसरे देश में *सुशांत सुप्रिय*	20
व्यंग्य	: मैं कहती आंखों की देखी *अलका अग्रवाल*	24
पुस्तकायन	: पांचवां स्तम्भ *डॉ. शरद सिंह*	26
कहानी	: नीली रोशनी *अमनदीप सिंह*	29
गद्य कविता	: सोने सी बालें *अंजू मेहता*	34
कविता	मेरे खुदा! तू है कहां? *ए.के. अर्चना*	35
शोध आलेख	: मॉरीशस में भारतवंशी समुदाय के अधिवास का सांस्कृतिक भू-परिदृश्य *डॉ. अनिल कुमार*	36

ए.के. अर्चना

हैदराबाद में जन्म। कविता संग्रह "इंद्रचाप" प्रकाशित। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। सम्प्रति - सैंट मैरिज सेंटेनरी डिग्री कॉलेज सिकंदराबाद हैदराबाद में असिस्टेंट प्रोफेसर।

सम्पर्क - akarchana520@gmail.com

मेरे खुदा! तू है कहां?

ढूंढ़ा हर ज़र्रा ज़र्रा,
ढूंढ़ा सारा जहां,
ढूंढ़ा मंदिर में,
ढूंढ़ा मस्जिद में,
ए खुदा! तू ये बता,
तू है तो है कहां?

बच्चों की किलकारी में तुझे ढूंढ़ूं,
या सावन की मस्त हवाओं में तुझे ढूंढ़ूं?
बहते हुए झरनों में तुझे ढूंढ़ूं,
या पहाड़ की ऊंचाइयों में तुझे ढूंढ़ूं?
आसमां के बादलों में तुझे ढूंढ़ूं,
या बारिश की बूंदों में तुझे ढूंढ़ूं?
ए खुदा! तू ये बता,
तू है तो है कहां?

अमीर के महलों में तुझे ढूंढ़ूं,
या गरीब की झोपड़ी में तुझे ढूंढ़ू?
मानव की खुशी में तुझे ढूंढ़ूं,
या गम के अंधेरों में तुझे ढूंढ़ूं?
रूठी ख्वाहिशों में तुझे ढूंढ़ूं,
या झूठी उम्मीदों में,
तुझे ढूंढ़ूं?
ए खुदा! तू ये बता,
तू है तो है कहां?

तेरे अस्तित्व का तू ही एक मूलाधार है,
मेरे सारे प्रश्नों का तू ही एक जवाब है,
ढूंढने को तो सारी दुनिया में तुझे ढूंढ लूं,
पर तेरे होने का कहां से प्रमाण दूं?

थकी, हारी तुझे ढूंढ ढूंढ कर,
आंख मूंद ली थक हार कर,
अंदर से एक ध्वनि गूंजी थी,
मानो मेरे सारे प्रश्नों की,
वहीं एक कुंजी थी,
आवाज आई....

किसे ढूंढती है पगली...
मैं तो तेरे पास हूं,
तेरे अंतर्मन में जो विश्वास है,
उस विश्वास का आभास हूं,
तेरे अंदर रचा बसा हूं मैं,
तू तू नहीं... मैं मैं नहीं...
तुझ से बना मैं,
मुझ से बनी तू,
तेरे निष्प्राण देह का,
मैं ही तो श्वास हूं...
मैं ही तो श्वास हूं...